قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ

पारा - 17

eParah

اٰيَاتُهَا: 112 | 21 سُوۡرَةُ الۡاَنۡبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ 73 | رُكُوۡعَاتُهَا: 7

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِقۡتَرَبَ	لِلنَّاسِ	حِسَابُهُمۡ	وَهُمۡ	فِيۡ غَفۡلَةٍ	مُّعۡرِضُوۡنَ ۚ 1	مَا
क़रीब आ गया	लोगों के लिए	हिसाब उनका	और वो	ग़फ़लत में	ऐराज़ करने वाले हैं	नहीं

يَاۡتِيۡهِمۡ	مِّنۡ ذِكۡرٍ	مِّنۡ رَّبِّهِمۡ	مُّحۡدَثٍ	اِلَّا	اسۡتَمَعُوۡهُ	وَهُمۡ
आता उनके पास	कोई ज़िक्र	उनके रब की तरफ़ से	नया	मगर	वो सुनते हैं उसे	जबकि वो

يَلۡعَبُوۡنَ 2 ۙ	لَاهِيَةً	قُلُوۡبُهُمۡ ؕ	وَاَسَرُّوا	النَّجۡوَى ۖ	الَّذِيۡنَ
वो खेल रहे होते हैं	ग़ाफ़िल हैं	दिल उनके	और चुपके-चुपके की	सरगोशी	उन लोगों ने जिन्होंने

ظَلَمُوۡا ۖ	هَلۡ	هٰذَاۤ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثۡلُكُمۡ ۚ	اَفَتَاۡتُوۡنَ	السِّحۡرَ
ज़ुल्म किया	नहीं	ये	मगर	एक इन्सान	तुम्हारे जैसा	क्या फिर तुम आते हो	जादू को

وَاَنۡتُمۡ	تُبۡصِرُوۡنَ 3	قٰلَ	رَبِّيۡ	يَعۡلَمُ	الۡقَوۡلَ	فِي السَّمَآءِ
जबकि तुम	तुम देखते हो	कहा	मेरा रब	जानता है	हर बात को	आसमान में

وَالۡاَرۡضِ	وَهُوَ	السَّمِيۡعُ	الۡعَلِيۡمُ 4	بَلۡ	قَالُوۡۤا	اَضۡغَاثُ
और ज़मीन में	और वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	बल्कि	उन्होंने कहा	परेशान

اَحۡلَامٍۭ	بَلِ	افۡتَرٰٮهُ	بَلۡ	هُوَ	شَاعِرٌ ۖ ۚ	فَلۡيَاۡتِنَا	بِاٰيَةٍ
ख़्वाब हैं	बल्कि	इसने गढ़लिया उसे	बल्कि	वो	शायर है	पस चाहिए कि लाए हमारे पास	कोई निशानी

كَمَاۤ	اُرۡسِلَ	الۡاَوَّلُوۡنَ 5	مَاۤ	اٰمَنَتۡ	قَبۡلَهُمۡ	مِّنۡ قَرۡيَةٍ
जैसा कि	भेजे गए	पहले (रसूल)	नहीं	ईमान लाई थी	उनसे पहले	कोई बस्ती

اَهۡلَكۡنٰهَا ۚ	اَفَهُمۡ	يُؤۡمِنُوۡنَ 6	وَمَاۤ	اَرۡسَلۡنَا	قَبۡلَكَ	اِلَّا
हलाक कर दिया हमने जिसे	क्या फिर वो	वो ईमान लाएंगे	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	मगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رِجَالًا	نُّوْحِيْٓ	اِلَيْهِمْ	فَسْـَٔلُوْٓا	اَهْلَ الذِّكْرِ	اِنْ	كُنْتُمْ
मर्दों को	हम वही करते थे	तरफ़ उनके	पस पूछ लो	अहले ज़िक्र से	अगर	हो तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ ⑦	وَمَا	جَعَلْنٰهُمْ	جَسَدًا	لَّا يَاْكُلُوْنَ	الطَّعَامَ
नहीं तुम जानते	और नहीं	बनाए हमने उनके	ऐसे जिस्म	कि ना वो खाते हों	खाना

وَمَا	كَانُوْا	خٰلِدِيْنَ ⑧	ثُمَّ	صَدَقْنٰهُمُ	الْوَعْدَ	فَاَنْجَيْنٰهُمْ
और ना	थे वो	हमेशा रहने वाले	फिर	सच्चा किया हमने उनसे	वादा	पस निजात दी हमने उन्हें

وَمَنْ	نَّشَآءُ	وَاَهْلَكْنَا	الْمُسْرِفِيْنَ ⑨	لَقَدْ	اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكُمْ
और जिसे	हमने चाहा	और हलाक कर दिया हमने	हद से बढ़ने वालों को	अलबत्ता तहक़ीक़	नाज़िल की हमने	तरफ़ तुम्हारे

ع 1 10 1

كِتٰبًا	فِيْهِ	ذِكْرُكُمْ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ⑩ ع	وَكَمْ	قَصَمْنَا
एक किताब	जिसमें	ज़िक्र है तुम्हारा	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	और कितनी ही	तोड़ कर रख दीं हमने

مِنْ قَرْيَةٍ	كَانَتْ	ظَالِمَةً	وَّاَنْشَاْنَا	بَعْدَهَا	قَوْمًا	اٰخَرِيْنَ ⑪
बस्तियाँ	थीं वो	ज़ालिम	और उठाया हमने	बाद उनके	क़ौमों को	दूसरी

فَلَمَّآ	اَحَسُّوْا	بَاْسَنَآ	اِذَا	هُمْ	مِّنْهَا	يَرْكُضُوْنَ ⑫ ؕ	لَا تَرْكُضُوْا
तो जब	उन्होंने महसूस किया	अज़ाब हमारा	अचानक	वो	उनसे	वो भागने लगे	ना तुम भागो

وَارْجِعُوْٓا	اِلٰى مَآ	اُتْرِفْتُمْ	فِيْهِ	وَمَسٰكِنِكُمْ	لَعَلَّكُمْ
और लौट आओ	तरफ़ उसके जो	ऐश दिए गए तुम	जिस में	और अपने घरों के	ताकि तुम

تُسْـَٔلُوْنَ ⑬	قَالُوْا	يٰوَيْلَنَآ	اِنَّا	كُنَّا	ظٰلِمِيْنَ ⑭	فَمَا زَالَتْ
तुम पूछे जाओ	उन्होंने कहा	हाय अफ़सोस हम पर	बेशक हम	थे हम	ज़ालिम	तो मुसलसल रही

تِلْكَ	دَعْوٰىهُمْ	حَتّٰى	جَعَلْنٰهُمْ	حَصِيْدًا	خٰمِدِيْنَ ⑮	وَمَا
यही	पुकार उनकी	यहाँ तक कि	बना दिया हमने उन्हें	जड़ से कटी हुई खेती	बुझी हुई	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَلَقْنَا	السَّمَآءَ	وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	لٰعِبِيْنَ (16)	لَوْ
पैदा किया हमने	आसमान	और ज़मीन को	और जो	उन दोनों के दर्मियान है	खेलते हुए	अगर

اَرَدْنَآ	اَنْ	نَّتَّخِذَ	لَهْوًا	لَّاتَّخَذْنٰهُ	مِنْ لَّدُنَّآ ۖۗ	اِنْ	كُنَّا
चाहते हम	कि	हम बना लें	कोई खेल	यक़ीनन बना लेते हम उसे	अपने पास से	अगर	होते हम

فٰعِلِيْنَ (17)	بَلْ	نَقْذِفُ	بِالْحَقِّ	عَلَى الْبَاطِلِ	فَيَدْمَغُهٗ
करने वाले	बल्कि	हम फेंकते हैं	हक़ को	बातिल पर	पस वो सर तोड़ देता है उसका

فَاِذَا	هُوَ	زَاهِقٌ ؕ	وَلَكُمُ	الْوَيْلُ	مِمَّا	تَصِفُوْنَ (18)	وَلَهٗ
तो यकायक	वो	ज़ाइल हो जाता है	और तुम्हारे लिए	हलाकत है	उससे जो	तुम बयान करते हो	और उसी के लिए है

مَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَمَنْ	عِنْدَهٗ	لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
जो	आसमानों में	और ज़मीन में है	और जो	उसके पास हैं	नहीं वो तकब्बुर करते

عَنْ عِبَادَتِهٖ	وَلَا	يَسْتَحْسِرُوْنَ (19) ۚ	يُسَبِّحُوْنَ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ
उसकी इबादत से	और ना	वो थकते हैं	वो तस्बीह करते हैं	रात	और दिन

لَا يَفْتُرُوْنَ (20)	اَمِ	اتَّخَذُوْٓا	اٰلِهَةً	مِّنَ الْاَرْضِ	هُمْ
नहीं वो दम लेते	क्या	उन्होंने बना लिए हैं	कुछ इलाह	ज़मीन में	कि वो

يُنْشِرُوْنَ (21)	لَوْ	كَانَ	فِيْهِمَآ	اٰلِهَةٌ	اِلَّا	اللّٰهُ	لَفَسَدَتَا ۚ
वो ज़िन्दा करेंगे	अगर	होते	उन दोनों में	कुछ इलाह	सिवाय	अल्लाह के	अलबत्ता वो दोनों बिगड़ जाते

فَسُبْحٰنَ	اللّٰهِ	رَبِّ	الْعَرْشِ	عَمَّا	يَصِفُوْنَ (22)	لَا يُسْـَٔلُ
पस पाक है	अल्लाह	जो रब है	अर्श का	उससे जो	वो बयान करते हैं	नहीं वो पूछा जाता

عَمَّا	يَفْعَلُ	وَهُمْ	يُسْـَٔلُوْنَ (23)	اَمِ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ
उसके बारे में जो	वो करता है	और वो	वो पूछे जाएँगे	या	उन्होंने बना लिए	उसके सिवा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰلِهَةً ؕ	قُلْ	هَاتُوْا	بُرْهَانَكُمْ ۚ	هٰذَا	ذِكْرُ	مَنْ	مَّعِيَ
कुछ इलाह	कह दीजिए	लाओ	दलील अपनी	ये	ज़िक्र है	उनका जो	मेरे साथ है

وَذِكْرُ	مَنْ	قَبْلِيْ ؕ	بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ	الْحَقَّ
और ज़िक्र है	(उनका भी) जो	मुझसे पहले थे	बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो जानते	हक़ को

فَهُمْ	مُّعْرِضُوْنَ ﴿24﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	مِنْ رَّسُوْلٍ	اِلَّا
तो वो	ऐराज़ करने वाले हैं	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	कोई रसूल	मगर

نُوْحِيْٓ	اِلَيْهِ	اَنَّهٗ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّآ	اَنَا	فَاعْبُدُوْنِ ﴿25﴾
हमने वही की	तरफ़ उसके	कि बेशक वो	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	मैं ही	पस इबादत करो मेरी

وَقَالُوا	اتَّخَذَ	الرَّحْمٰنُ	وَلَدًا	سُبْحٰنَهٗ ؕ	بَلْ	عِبَادٌ
और उन्होंने कहा	बना ली है	रहमान ने	औलाद	पाक है वो	बल्कि	वो बन्दे हैं

مُّكْرَمُوْنَ ﴿26﴾ ۙ	لَا يَسْبِقُوْنَهٗ	بِالْقَوْلِ	وَهُمْ	بِاَمْرِهٖ	يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾
जो इज़्ज़त दिए गए हैं	नहीं वो आगे बढ़ते उससे	बात में	और वो	उसके हुक्म पर ही	वो अमल करते हैं

يَعْلَمُ	مَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	وَمَا	خَلْفَهُمْ	وَلَا	يَشْفَعُوْنَ ۙ	اِلَّا
वो जानता है	जो कुछ	उनके आगे है	और जो कुछ	उनके पीछे है	और नहीं	वो शफ़ाअत करेंगे	मगर

لِمَنِ	ارْتَضٰى	وَهُمْ	مِّنْ خَشْيَتِهٖ	مُشْفِقُوْنَ ﴿28﴾	وَمَنْ	يَّقُلْ
जिसके लिए	वो राज़ी हो जाए	और वो	इसकी ख़शीयत से	डरने वाले हैं	और जो कोई	कहे

مِنْهُمْ	اِنِّيْٓ	اِلٰهٌ	مِّنْ دُوْنِهٖ	فَذٰلِكَ	نَجْزِيْهِ	جَهَنَّمَ ؕ
इनमें से	बेशक मैं	इलाह हूँ	उसके सिवा	तो ऐसी सूरत में	हम बदले में देंगे उसे	जहन्नम

ع 2 19 2

كَذٰلِكَ	نَجْزِي	الظّٰلِمِيْنَ ﴿29﴾ ع	اَوَلَمْ	يَرَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا
इसी तरह	हम बदला देते हैं	ज़ालिमों को	क्या भला नहीं	देखा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया

© ILHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنَّ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	كَانَتَا	رَتْقًا	فَفَتَقْنٰهُمَا ط	وَجَعَلْنَا
कि बेशक	आसमान	और ज़मीन	थे वो दोनों	मिले हुए	तो जुदा-जुदा कर दिया हमने उन दोनों को	और बनाई हमने

مِنَ الْمَآءِ	كُلَّ شَیْءٍ	حَیٍّ ط	اَفَلَا	یُؤْمِنُوْنَ (30)	وَجَعَلْنَا	فِی الْاَرْضِ
पानी से	हर चीज़	ज़िन्दा	क्या फिर नहीं	वो ईमान लाते	और बनाया हमने	ज़मीन में

رَوَاسِیَ	اَنْ	تَمِیْدَ	بِهِمْ ص	وَجَعَلْنَا	فِیْهَا	فِجَاجًا
पहाड़ों को	कि	(ना) वो ढुलक जाए	साथ उनके	और बनाए हमने	उसमें	कुशादा

سُبُلًا	لَّعَلَّهُمْ	یَهْتَدُوْنَ (31)	وَجَعَلْنَا	السَّمَآءَ	سَقْفًا	مَّحْفُوْظًا ج
रास्ते	ताकि वो	वो राह पा जाएं	और बनाया हमने	आसमान को	छत	महफ़ूज़

وَّهُمْ	عَنْ اٰیٰتِهَا	مُعْرِضُوْنَ (32)	وَهُوَ	الَّذِیْ	خَلَقَ	الَّیْلَ
और वो	उसकी निशानियों से	मुँह मोड़ने वाले हैं	और वो ही है	जिसने	बनाया	रात

وَالنَّهَارَ	وَالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ط	كُلٌّ	فِیْ فَلَكٍ	یَّسْبَحُوْنَ (33)	وَمَا
और दिन को	और सूरज	और चाँद को	सब के सब	(अपने) मदार में	वो तैरते हैं	और नहीं

جَعَلْنَا	لِبَشَرٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	الْخُلْدَ ط	اَفَاۡئِنْ	مِّتَّ	فَهُمُ
बनाई हमने	किसी इन्सान के लिए	आप से पहले	हमेशगी	क्या फिर अगर	आप फ़ौत होगए	तो वो

الْخٰلِدُوْنَ (34)	كُلُّ نَفْسٍ	ذَآئِقَةُ	الْمَوْتِ ط	وَنَبْلُوْكُمْ	بِالشَّرِّ
हमेशा रहने वाले हैं	हर नफ़्स	चखने वाला है	मौत को	और हम मुब्तला करते हैं तुम्हें	साथ बुराई

وَالْخَیْرِ	فِتْنَةً ط	وَاِلَیْنَا	تُرْجَعُوْنَ (35)	وَاِذَا	رَاٰكَ	الَّذِیْنَ
और भलाई के	आज़माने के लिए	और हमारी ही तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	और जब	देखते हैं आपको	वो जिन्होंने

كَفَرُوْٓا	اِنْ	یَّتَّخِذُوْنَكَ	اِلَّا	هُزُوًا ط	اَهٰذَا	الَّذِیْ	یَذْكُرُ
कुफ़्र किया	नहीं	वो बनाते आपका	मगर	मज़ाक़	क्या ये है	वो जो	ज़िक्र करता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰلِهَتَكُمْ ۚ	وَهُمْ	بِذِكْرِ	الرَّحْمٰنِ	هُمْ	كٰفِرُوْنَ ﴿36﴾	خُلِقَ
तुम्हारे इलाहों का	हालाँकि वो	ज़िक्र से	रहमान के	वो	इन्कारी हैं	पैदा किया गया

الْاِنْسَانُ	مِنْ عَجَلٍ ؕ	سَاُوْرِيْكُمْ	اٰيٰتِيْ	فَلَا	تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿37﴾
इन्सान	उजलत (के ख़मीर) से	अनक़रीब मैं दिखाऊँगा तुम्हें	अपनी निशानियाँ	पस ना	तुम जल्दी माँगो मुझसे

وَيَقُوْلُوْنَ	مَتٰى	هٰذَا	الْوَعْدُ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿38﴾	لَوْ
और वो कहते हैं	कब है	ये	वादा	अगर	हो तुम	सच्चे	अगर

يَعْلَمُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	حِيْنَ	لَا يَكُفُّوْنَ	عَنْ وُّجُوْهِهِمُ
जान लें	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	जिस वक़्त	ना वो रोक सकेंगे	अपने चेहरों से

النَّارَ	وَلَا	عَنْ ظُهُوْرِهِمْ	وَلَا	هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿39﴾	بَلْ
आग को	और ना	अपनी पुश्तों से	और ना	वो	वो मदद दिए जाऐंगे	बल्कि

تَاْتِيْهِمْ	بَغْتَةً	فَتَبْهَتُهُمْ	فَلَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ	رَدَّهَا
वो आ जाएगी उनके पास	अचानक	तो वो मबहूत/हैरान कर देगी उन्हें	तो ना	वो इस्तिताअत रखते होंगे	उसको रद्द करने की

وَلَا	هُمْ	يُنْظَرُوْنَ ﴿40﴾	وَلَقَدِ	اسْتُهْزِئَ	بِرُسُلٍ	مِّنْ قَبْلِكَ
और ना	वो	वो मोहलत दिए जाऐंगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	मज़ाक़ उड़ाया गया	कई रसूलों का	आपसे पहले

فَحَاقَ	بِالَّذِيْنَ	سَخِرُوْا	مِنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ
तो घेर लिया	उनको जिन्होंने	मज़ाक़ उड़ाया	उनमें से	उसने जो	थे वो	जिसका

ع 3 12 3

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿41﴾ ع	قُلْ	مَنْ	يَّكْلَؤُكُمْ	بِالَّيْلِ	وَالنَّهَارِ
वो मज़ाक़ उड़ाते	कह दीजिए	कौन	निगहबानी कर रहा तुम्हारी	रात	और दिन को

مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ	بَلْ	هُمْ	عَنْ ذِكْرِ	رَبِّهِمْ	مُّعْرِضُوْنَ ﴿42﴾	اَمْ
रहमान से	बल्कि	वो	ज़िक्र से	अपने रब के	ऐराज़ करने वाले हैं	या

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	اٰلِهَةٌ	تَمْنَعُهُمْ	مِّنْ دُوْنِنَا ؕ	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	نَصْرَ
उनके लिए	कुछ इलाह हैं	जो बचाते हैं उन्हें	हमारे सिवा	नहीं वो इस्तिताअत रखते	मदद की

اَنْفُسِهِمْ	وَلَا	هُمْ	مِّنَّا	يُصْحَبُوْنَ ﴿43﴾	بَلْ	مَتَّعْنَا	هٰٓؤُلَآءِ
अपनी जानों की	और ना	वो	हमारी तरफ़ से	वो साथ दिए जाते हैं	बल्कि	फ़ायदा दिया हमने	उन लोगों को

وَاٰبَآءَهُمْ	حَتّٰى	طَالَ	عَلَيْهِمُ	الْعُمُرُ ؕ	اَفَلَا	يَرَوْنَ	اَنَّا
और उनके आबा व अजदाद को	यहाँ तक कि	लम्बी हो गई	उन पर	उम्र	क्या फिर नहीं	वो देखते	कि बेशक हम

نَاْتِي	الْاَرْضَ	نَنْقُصُهَا	مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ	اَفَهُمُ	الْغٰلِبُوْنَ ﴿44﴾
हम आते हैं	ज़मीन को	हम घटाते हैं उसे	उसके किनारों से	क्या फिर वो	ग़ालिब आने वाले हैं

قُلْ	اِنَّمَآ	اُنْذِرُكُمْ	بِالْوَحْيِ ۚ	وَلَا	يَسْمَعُ	الصُّمُّ	الدُّعَآءَ
कह दीजिए	बेशक	मैं डराता हूँ तुम्हें	साथ वही के	और नहीं	सुना करते	बहरे	पुकार को

اِذَا مَا	يُنْذَرُوْنَ ﴿45﴾	وَلَئِنْ	مَّسَّتْهُمْ	نَفْحَةٌ	مِّنْ عَذَابِ
जब भी	वो डराए जाते हैं	और अलबत्ता अगर	छू जाए उन्हें	एक झोंका	अज़ाब से

رَبِّكَ	لَيَقُوْلُنَّ	يٰوَيْلَنَآ	اِنَّا	كُنَّا	ظٰلِمِيْنَ ﴿46﴾	وَنَضَعُ
आपके रब का	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	हाय अफ़सोस हम पर	बेशक हम	थे हम ही	ज़ालिम	और हम रख देंगे

الْمَوَازِيْنَ	الْقِسْطَ	لِيَوْمِ	الْقِيٰمَةِ	فَلَا	تُظْلَمُ	نَفْسٌ	شَيْـًٔا ؕ
तराज़ू	इन्साफ़ वाले	दिन	क़यामत के	तो ना	ज़ुल्म किया जाएगा	किसी नफ़्स पर	कुछ भी

وَاِنْ	كَانَ	مِثْقَالَ	حَبَّةٍ	مِّنْ خَرْدَلٍ	اَتَيْنَا	بِهَا ؕ	وَكَفٰى
और अगरचे	हो वो	बराबर	दाने	राई के	हम ले आएंगे	उसे	और काफ़ी हैं

بِنَا	حٰسِبِيْنَ ﴿47﴾	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ	الْفُرْقَانَ
हम	हिसाब लेने वाले	और अलबत्ता तहक़ीक़	दिया हमने	मूसा	और हारून को	फ़ुरक़ान

وَضِيَآءً	وَّذِكْرًا	لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ ﴿48﴾	الَّذِيْنَ	يَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ	بِالْغَيْبِ
और रोशनी	और ज़िक्र	मुत्तक़ी लोगों के लिए	वो जो	डरते हैं	अपने रब से	ग़ायबाना तौर पर

وَهُمْ	مِّنَ السَّاعَةِ	مُشْفِقُوْنَ ﴿49﴾	وَهٰذَا	ذِكْرٌ	مُّبٰرَكٌ
और वो	क़यामत से	डरने वाले हैं	और ये है	ज़िक्र	बा बरकत

ع 4 9 4

اَنْزَلْنٰهُ ؕ	اَفَاَنْتُمْ	لَهٗ	مُنْكِرُوْنَ ﴿50﴾ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَآ	اِبْرٰهِيْمَ
नाज़िल किया हमने उसे	क्या फिर तुम	उसका	इन्कार करने वाले हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	इब्राहीम को

رُشْدَهٗ	مِنْ قَبْلُ	وَكُنَّا	بِهٖ	عٰلِمِيْنَ ﴿51﴾ ج	اِذْ	قَالَ	لِاَبِيْهِ
समझ बूझ उसकी	इससे क़ब्ल	और थे हम	उसे	जानने वाले	जब	उसने कहा	अपने बाप से

وَقَوْمِهٖ	مَا	هٰذِهِ	التَّمَاثِيْلُ	الَّتِيْٓ	اَنْتُمْ	لَهَا	عٰكِفُوْنَ ﴿52﴾
और अपनी क़ौम से	क्या हैं	ये	मूर्तियाँ	वो जो	तुम	उनके लिए	जम कर बैठने वाले हो

قَالُوْا	وَجَدْنَآ	اٰبَآءَنَا	لَهَا	عٰبِدِيْنَ ﴿53﴾	قَالَ	لَقَدْ	كُنْتُمْ
उन्होंने कहा	पाया हमने	अपने आबा ओ अजदाद को	इनकी	इबादत करने वाले	उसने कहा	अलबत्ता तहक़ीक़	हो तुम

اَنْتُمْ	وَاٰبَآؤُكُمْ	فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿54﴾	قَالُوْٓا	اَجِئْتَنَا	بِالْحَقِّ
तुम	और आबा ओ अजदाद तुम्हारे	गुमराही में	खुली	उन्होंने कहा	क्या तू लाया है हमारे पास	हक़ को

اَمْ	اَنْتَ	مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿55﴾	قَالَ	بَلْ	رَّبُّكُمْ	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ
या	तू	दिल्लगी करने वालों में से है	कहा	बल्कि	रब तुम्हारा	रब है	आसमानों

وَالْاَرْضِ	الَّذِيْ	فَطَرَهُنَّ ۖ	وَاَنَا	عَلٰى	ذٰلِكُمْ	مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿56﴾
और ज़मीन का	जिसने	पैदा किया है इन्हें	और मैं	ऊपर	इसके	गवाहों में से हूँ

وَتَاللّٰهِ	لَاَكِيْدَنَّ	اَصْنَامَكُمْ	بَعْدَ	اَنْ	تُوَلُّوْا	مُدْبِرِيْنَ ﴿57﴾
और क़सम अल्लाह की	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूँगा	तुम्हारे बुतों से	इसके बाद	कि	तुम चले जाओगे	पीठ फेरकर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَجَعَلَهُمْ	جُذٰذًا	اِلَّا	كَبِيْرًا	لَّهُمْ	لَعَلَّهُمْ	اِلَيْهِ
तो उसने कर दिया उन्हें	टुकड़े-टुकड़े	सिवाय	एक बड़े के	उनके	शायद कि वो	उसकी तरफ़

يَرْجِعُوْنَ ﴿58﴾	قَالُوْا	مَنْ	فَعَلَ	هٰذَا	بِاٰلِهَتِنَآ	اِنَّهٗ
वो रुजूअ करें	उन्होंने कहा	किसने	किया है	ये	साथ हमारे इलाहों के	यक़ीनन वो

لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿59﴾	قَالُوْا	سَمِعْنَا	فَتًى	يَّذْكُرُهُمْ	يُقَالُ	لَهٗٓ
अलबत्ता ज़ालिमों में से है	उन्होंने कहा	सुना हमने	एक नौजवान को	वो ज़िक्र करता था उनका	कहा जाता है	उसे

اِبْرٰهِيْمُ ﴿60﴾ ط	قَالُوْا	فَاْتُوْا	بِهٖ	عَلٰٓى اَعْيُنِ	النَّاسِ	لَعَلَّهُمْ
इब्राहीम	उन्होंने कहा	पस लाओ	उसे	आँखों के सामने	लोगों की	ताकि वो

يَشْهَدُوْنَ ﴿61﴾	قَالُوْٓا	ءَاَنْتَ	فَعَلْتَ	هٰذَا	بِاٰلِهَتِنَا
वो गवाह हो जाऐं	उन्होंने कहा	क्या तुम	किया तुमने	ये	साथ हमारे इलाहों के

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿62﴾ ط	قَالَ	بَلْ	فَعَلَهٗ ۖ	كَبِيْرُهُمْ	هٰذَا	فَسْـَٔلُوْهُمْ
ऐ इब्राहीम	उसने कहा	बल्कि	किया है उसे	उनके बड़े	उसने	पस पूछो उनसे

اِنْ	كَانُوْا	يَنْطِقُوْنَ ﴿63﴾	فَرَجَعُوْٓا	اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	فَقَالُوْٓا	اِنَّكُمْ
अगर	हैं वो	वो बोलते	तो वो पलटे	तरफ़ अपने दिलों के	तो उन्होंने कहा	बेशक तुम

اَنْتُمُ	الظّٰلِمُوْنَ ﴿64﴾ لا	ثُمَّ	نُكِسُوْا	عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ	لَقَدْ
तुम ही	ज़लिम हो	फिर	वो औंधे कर दिए गए	अपने सरों पर	अलबत्ता तहक़ीक़

عَلِمْتَ	مَا	هٰٓؤُلَآءِ	يَنْطِقُوْنَ ﴿65﴾	قَالَ	اَفَتَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
जानता है तू	नहीं	हैं ये	बोलते	उसने कहा	क्या भला तुम इबादत करते हो	सिवाय

اللّٰهِ	مَا	لَا يَنْفَعُكُمْ	شَيْـًٔا	وَّلَا	يَضُرُّكُمْ ﴿66﴾ ط	اُفٍّ	لَّكُمْ
अल्लाह के	उनकी जो	नहीं वो नफ़ा देते तुम्हें	कुछ भी	और ना	वो नुक़सान दे सकते हैं तुम्हें	उफ़ है	तुम पर

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلِمَا	تَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿67﴾	قَالُوْا
और जिनकी	तुम इबादत करते हो	सिवाय	अल्लाह के	क्या भला नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	उन्होंने कहा

حَرِّقُوْهُ	وَانْصُرُوْٓا	اٰلِهَتَكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	فٰعِلِيْنَ ﴿68﴾	قُلْنَا
जला डालो इसे	और मदद करो	अपने इलाहों की	अगर	हो तुम	करने वाले	कहा हमने

يٰنَارُ	كُوْنِيْ	بَرْدًا	وَّسَلٰمًا	عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿69﴾ لا	وَاَرَادُوْا	بِهٖ
ऐ आग	हो जा	ठँडी	और सलामती (वाली)	इब्राहीम पर	और उन्होंने इरादा किया	साथ उसके

كَيْدًا	فَجَعَلْنٰهُمُ	الْاَخْسَرِيْنَ ﴿70﴾ ج	وَنَجَّيْنٰهُ	وَلُوْطًا	اِلَى الْاَرْضِ
चाल चलने का	तो बना दिया हमने उन्हें	सबसे ज़्यादा ख़सारा पाने वाले	और निजात दी हमने उसे	और लूत को	तरफ़ उस ज़मीन के

الَّتِيْ	بٰرَكْنَا	فِيْهَا	لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿71﴾	وَوَهَبْنَا	لَهٗٓ	اِسْحٰقَ ؕ
वो जो	बरकत रखी हमने	उसमें	तमाम जहान वालों के लिए	और अता किया हमने	उसे	इसहाक़

وَيَعْقُوْبَ	نَافِلَةً ؕ	وَكُلًّا	جَعَلْنَا	صٰلِحِيْنَ ﴿72﴾	وَجَعَلْنٰهُمْ	اَىِٕمَّةً
और याक़ूब	मज़ीद	और सबको	बनाया हमने	सालेह/नेक	और बनाया हमने उन्हें	इमाम

يَّهْدُوْنَ	بِاَمْرِنَا	وَاَوْحَيْنَآ	اِلَيْهِمْ	فِعْلَ	الْخَيْرٰتِ
वो रहनुमाई करते थे	हमारे हुक्म से	और वही की हमने	तरफ़ उनके	करने को	भलाईयाँ

وَاِقَامَ	الصَّلٰوةِ	وَاِيْتَآءَ	الزَّكٰوةِ ج	وَكَانُوْا	لَنَا	عٰبِدِيْنَ ﴿73﴾ لا ج
और क़ायम करना	नमाज़ का	और अदा करना	ज़कात का	और थे वो	हमारे लिए	इबादत गुज़ार

وَلُوْطًا	اٰتَيْنٰهُ	حُكْمًا	وَّعِلْمًا	وَّنَجَّيْنٰهُ	مِنَ الْقَرْيَةِ	الَّتِيْ
और लूत	अता किया हमने उसे	हुक्म	और इल्म	और निजात दी हमने उसे	उस बस्ती से	वो जो

كَانَتْ	تَّعْمَلُ	الْخَبٰٓىِٕثَ ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	قَوْمَ	سَوْءٍ	فٰسِقِيْنَ ﴿74﴾ لا
थी	वो करती	ख़बीस काम	यक़ीनन वो	थे वो	लोग	बुरे	फ़ासिक़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 25 5

وَ اَدْخَلْنٰهُ	فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ	اِنَّهٗ	مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿75﴾ ع	وَ نُوْحًا	اِذْ
और दाख़िल किया हमने उसे	अपनी रहमत में	यक़ीनन वो	नेक लोगों में से था	और नूह	जब

نَادٰی	مِنْ قَبْلُ	فَاسْتَجَبْنَا	لَهٗ	فَنَجَّیْنٰهُ	وَ اَهْلَهٗ
उसने पुकारा	इससे पहले	तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने	उसकी	तो निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को

مِنَ الْكَرْبِ	الْعَظِیْمِ ﴿76﴾ ج	وَ نَصَرْنٰهُ	مِنَ الْقَوْمِ	الَّذِیْنَ	كَذَّبُوْا
करब/दुख से	बहुत बड़े	और मदद की हमने उसकी	उन लोगों के मुक़ाबले में	जिन्होंने	झुठलाया

بِاٰیٰتِنَا ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	قَوْمَ	سَوْءٍ	فَاَغْرَقْنٰهُمْ	اَجْمَعِیْنَ ﴿77﴾
हमारी आयात को	बेशक वो	थे वो	लोग	बुरे	तो ग़र्क़ कर दिया हमने उनको	सबके सब को

وَ دَاوٗدَ	وَ سُلَیْمٰنَ	اِذْ	یَحْكُمٰنِ	فِی الْحَرْثِ	اِذْ	نَفَشَتْ
और दाऊद	और सुलेमान	जब	वो दोनों फ़ैसला कर रहे थे	खेत के मामले में	जब	रात को चर लिया था

فِیْهِ	غَنَمُ	الْقَوْمِ ج	وَ كُنَّا	لِحُكْمِهِمْ	شٰهِدِیْنَ ﴿78﴾ ق	فَفَهَّمْنٰهَا
उसमें	बकरियों ने	क़ौम की	और थे हम	उनके फ़ैसले को	देखने वाले	पस समझा दिया हमने ये (फ़ैसला)

سُلَیْمٰنَ ج	وَ كُلًّا	اٰتَیْنَا	حُكْمًا	وَّ عِلْمًا ز	وَّ سَخَّرْنَا	مَعَ	دَاوٗدَ
सुलेमान को	और हर एक को	दिया हमने	हुक्म	और इल्म	और मुसख़्ख़र किए हमने	साथ	दाऊद के

الْجِبَالَ	یُسَبِّحْنَ	وَ الطَّیْرَ ؕ	وَ كُنَّا	فٰعِلِیْنَ ﴿79﴾	وَ عَلَّمْنٰهُ
पहाड़	वो तस्बीह करते थे	और परिन्दे (भी)	और थे हम ही	करने वाले	और सिखाया हमने उसे

صَنْعَةَ	لَبُوْسٍ	لَّكُمْ	لِتُحْصِنَكُمْ	مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ج	فَهَلْ	اَنْتُمْ
बनाना	लिबास का	तुम्हारे लिए	ताकि वो बचाए तुम्हें	तुम्हारी जंग से	तो क्या	तुम

شٰكِرُوْنَ ﴿80﴾	وَ لِسُلَیْمٰنَ	الرِّیْحَ	عَاصِفَةً	تَجْرِیْ	بِاَمْرِهٖۤ
शुक्र गुज़ार हो	और सुलेमान के लिए	हवा (मुसख़्ख़र की)	तुँद-व तेज़-चलने वाली	वो चलती थी	उसके हुक्म से

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَى الْاَرْضِ	الَّتِىْ	بٰرَكْنَا	فِيْهَا ؕ	وَ كُنَّا	بِكُلِّ شَىْءٍ	عٰلِمِيْنَ ﴿81﴾
तरफ़ उस ज़मीन के	वो जो	बरकत रखी हमने	जिसमें	और थे हम	हर चीज़ को	जानने वाले

وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ	مَنْ	يَّغُوْصُوْنَ	لَهٗ	وَ يَعْمَلُوْنَ	عَمَلًا	دُوْنَ
और कुछ शयातीन	जो	ग़ोता लगाते थे	उसके लिए	और वो करते थे	कुछ काम	अलावा

ذٰلِكَ ۚ	وَ كُنَّا	لَهُمْ	حٰفِظِيْنَ ﴿82﴾ ۙ	وَ اَيُّوْبَ	اِذْ	نَادٰى
उसके	और थे हम ही	उनकी	निगरानी करने वाले	और अय्यूब	जब	पुकारा उसने

رَبَّهٗۤ	اَنِّىْ	مَسَّنِىَ	الضُّرُّ	وَ اَنْتَ	اَرْحَمُ	الرّٰحِمِيْنَ ﴿83﴾ ۚۖ
अपने रब को	कि बेशक मैं	पहुँची है मुझे	तकलीफ़	और तू	सबसे ज़यादा रहम करने वाला है	सब रहम करने वालों से

فَاسْتَجَبْنَا	لَهٗ	فَكَشَفْنَا	مَا	بِهٖ	مِنْ ضُرٍّ	وَّ اٰتَيْنٰهُ
तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने	उसकी	तो दूर कर दी हमने	जो कुछ	उसे	तकलीफ़ थी	और दिए हमने उसे

اَهْلَهٗ	وَ مِثْلَهُمْ	مَّعَهُمْ	رَحْمَةً	مِّنْ عِنْدِنَا	وَ ذِكْرٰى
अहल ओ अयाल उसके	और उनकी मानिन्द	साथ उनके	बतौर-ए-रहमत	अपने पास से	और नसीहत

لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿84﴾	وَ اِسْمٰعِيْلَ	وَ اِدْرِيْسَ	وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ	كُلٌّ	مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿85﴾ ۖۚ
इबादत करने वालों के लिए	और इस्माईल	और इदरीस	और ज़ुलकिफ़्ल	सब	सब्र करने वालों में से थे

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ	فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ	اِنَّهُمْ	مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿86﴾	وَ ذَا النُّوْنِ	
और दाख़िल किया हमने उन्हें	अपनी रहमत में	यक़ीनन वो	सालेह लोगों में से थे	और मछली वाला	

اِذْ	ذَّهَبَ	مُغَاضِبًا	فَظَنَّ	اَنْ	لَّنْ	نَّقْدِرَ	عَلَيْهِ
जब	वो चला गया	ग़ज़बनाक होकर	तो उसने समझ लिया	कि	हरगिज़ नहीं	हम क़ादिर होंगे	उस पर

فَنَادٰى	فِى الظُّلُمٰتِ	اَنْ	لَّاۤ	اِلٰهَ	اِلَّاۤ	اَنْتَ	سُبْحٰنَكَ ۖ
तो उसने पुकारा	अँधेरों में	कि	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	तू ही	पाक है तू

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنِّیْ	كُنْتُ	مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿87﴾ ۚ	فَاسْتَجَبْنَا	لَهٗ ۙ	وَ نَجَّیْنٰهُ
बेशक मैं	हूँ मैं	ज़ालिमों में से	तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने	उसकी	और निजात दी हमने उसे

مِنَ الْغَمِّ ؕ	وَ كَذٰلِكَ	نُـْۨجِی	الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿88﴾	وَ زَكَرِیَّاۤ	اِذْ
ग़म से	और इसी तरह	हम निजात दिया करते है	ईमान वालों को	और ज़करीया	जब

نَادٰی	رَبَّهٗ	رَبِّ	لَا تَذَرْنِیْ	فَرْدًا	وَّ اَنْتَ	خَیْرُ
उसने पुकारा	अपने रब को	ऐ मेरे रब	ना तू छोड़ मुझे	अकेला	और तू ही	बेहतर है

الْوٰرِثِیْنَ ﴿89﴾ ۚ	فَاسْتَجَبْنَا	لَهٗ ۪	وَ وَهَبْنَا	لَهٗ	یَحْیٰی	وَ اَصْلَحْنَا
सब वारिसों में	तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने	उसकी	और अता किया हमने	उसे	यहया	और दुरुस्त कर दी हमने

لَهٗ	زَوْجَهٗ ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	یُسٰرِعُوْنَ	فِی الْخَیْرٰتِ	وَ یَدْعُوْنَنَا
उसके लिए	बीवी उसकी	यक़ीनन वो	थे वो	वो जल्दी करते	नेकियों में	और वो पुकारते थे हमें

رَغَبًا	وَّ رَهَبًا ؕ	وَ كَانُوْا	لَنَا	خٰشِعِیْنَ ﴿90﴾	وَ الَّتِیْۤ	اَحْصَنَتْ
रग़बत	और ख़ौफ़ से	और थे वो	हमारे ही लिए	ख़ुशू करने वाले	और उस औरत को	जिसने हिफ़ाज़त की

فَرْجَهَا	فَنَفَخْنَا	فِیْهَا	مِنْ رُّوْحِنَا	وَ جَعَلْنٰهَا	وَ ابْنَهَاۤ
अपनी शर्मगाह की	तो फूँक दिया हमने	उसमें	अपनी रूह से	और बनाया हमने उसे	और उसके बेटे को

اٰیَةً	لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿91﴾	اِنَّ	هٰذِهٖۤ	اُمَّتُكُمْ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً ۖ	وَّ اَنَا
एक निशानी	तमाम जहान वालों के लिए	यक़ीनन	ये	उम्मत है तुम्हारी	उम्मत	एक ही	और मैं

رَبُّكُمْ	فَاعْبُدُوْنِ ﴿92﴾	وَ تَقَطَّعُوْۤا	اَمْرَهُمْ	بَیْنَهُمْ ؕ	كُلٌّ
रब हूँ तुम्हारा	पस इबादत करो मेरी	और उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर डाला	अपने काम (दीन) को	आपस में	सबके सब

اِلَیْنَا	رٰجِعُوْنَ ﴿93﴾ ع	فَمَنْ	یَّعْمَلْ	مِنَ الصّٰلِحٰتِ	وَ هُوَ	مُؤْمِنٌ
तरफ़ हमारे	लौटने वाले हैं	तो जो कोई	अमल करेगा	नेकियों में से	जबकि वो	मोमिन हो

ع 6 18 6

© LAHORE INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَلَا	كُفْرَانَ	لِسَعْيِهٖ ۚ	وَاِنَّا	لَهٗ	كٰتِبُوْنَ ﴿94﴾	وَحَرٰمٌ
तो नहीं	कोई नाक़द्री	उसकी कोशिशों की	और बेशक हम	उसके लिए	लिखने वाले हैं	और लाज़िम है

عَلٰى قَرْيَةٍ	اَهْلَكْنٰهَآ	اَنَّهُمْ	لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿95﴾	حَتّٰٓى	اِذَا
बस्ती (वालों) पर	हलाक कर दिया हमने जिसे	कि बेशक वो	नहीं वो लौटेंगे	यहाँ तक कि	जब

فُتِحَتْ	يَاْجُوْجُ	وَمَاْجُوْجُ	وَهُمْ	مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ	يَّنْسِلُوْنَ ﴿96﴾
खोले जाऐंगे	याजूज	और माजूज	और वो	हर बुलन्दी से	वो तेज़ चल पड़ेंगे

وَاقْتَرَبَ	الْوَعْدُ	الْحَقُّ	فَاِذَا	هِىَ	شَاخِصَةٌ	اَبْصَارُ
और क़रीब आ जाएगा	वादा	सच्चा	तो अचानक	वो	खुली की खुली रह जाऐंगी	आँखें

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ؕ	يٰوَيْلَنَا	قَدْ	كُنَّا	فِىْ غَفْلَةٍ	مِّنْ هٰذَا	بَلْ
उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	हाय अफ़सोस हम पर	तहक़ीक़	थे हम	ग़फ़लत में	इससे	बल्कि

كُنَّا	ظٰلِمِيْنَ ﴿97﴾	اِنَّكُمْ	وَمَا	تَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
थे हम ही	ज़ालिम	बेशक तुम	और जिनकी	तुम इबादत करते हो	सिवाय	अल्लाह के

حَصَبُ	جَهَنَّمَ ؕ	اَنْتُمْ	لَهَا	وٰرِدُوْنَ ﴿98﴾	لَوْ	كَانَ	هٰٓؤُلَآءِ
ईंधन होंगे	जहन्नम का	तुम	इसी पर	वारिद/दाख़िल होने वाले हो	अगर	होते	ये

اٰلِهَةً	مَّا	وَرَدُوْهَا ؕ	وَكُلٌّ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿99﴾	لَهُمْ	فِيْهَا
इलाह	ना	वो वारिद होते उसमें	और सबके सब	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	उनके लिए	उसमें

زَفِيْرٌ	وَّهُمْ	فِيْهَا	لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿100﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	سَبَقَتْ	لَهُمْ
चिल्लाना होगा	और वो	उसमें	ना वो सुनेंगे	बेशक	वो लोग	पहले तय हो गई	उनके लिए

مِّنَّا	الْحُسْنٰٓى ۙ	اُولٰٓئِكَ	عَنْهَا	مُبْعَدُوْنَ ﴿101﴾ ۙ	لَا يَسْمَعُوْنَ
हमारी तरफ़ से	भलाई	यही लोग हैं	इससे	दूर रखे जाने वाले	नहीं वो सुनेंगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حَصِيْرُهَا ۚ	وَهُمْ	فِيْ مَا	اشْتَهَتْ	اَنْفُسُهُمْ	خٰلِدُوْنَ ﴿102﴾ ۚ
उसकी आहट को	और वो	उसमें जो	ख़्वाहिश करेंगे	नफ़्स उनके	हमेशा रहने वाले हैं

لَا يَحْزُنُهُمُ	الْفَزَعُ	الْاَكْبَرُ	وَتَتَلَقّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ	هٰذَا
ना ग़मगीन करेगी उन्हें	घबराहट	बड़ी	और इस्तिक़बाल करेंगे उनका	फ़रिश्ते	ये है

يَوْمَكُمُ	الَّذِيْ	كُنْتُمْ	تُوْعَدُوْنَ ﴿103﴾	يَوْمَ	نَطْوِي	السَّمَآءَ
दिन तुम्हारा	वो जो	थे तुम	तुम वादा दिए जाते	जिस दिन	हम लपेट देंगे	आसमान को

كَطَيِّ	السِّجِلِّ	لِلْكُتُبِ ؕ	كَمَا	بَدَاْنَآ	اَوَّلَ	خَلْقٍ	نُّعِيْدُهٗ ؕ
मानिन्द लपेटने	तूमार के (औराक़ को)	किताबों के लिए	जैसा कि	इब्तिदा की हमने	पहली	पैदाइश की	हम एआदा करेंगे उसका

وَعْدًا	عَلَيْنَا ؕ	اِنَّا	كُنَّا	فٰعِلِيْنَ ﴿104﴾	وَلَقَدْ	كَتَبْنَا
वादा है	हमारे ज़िम्मे	बेशक हम	हैं हम	करने वाले	और अलबत्ता तहक़ीक़	लिख दिया हमने

فِي الزَّبُوْرِ	مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ	اَنَّ	الْاَرْضَ	يَرِثُهَا	عِبَادِيَ
ज़बूर में	बाद ज़िक्र के	कि बेशक	ज़मीन	वारिस होंगे उसके	मेरे बन्दे

الصّٰلِحُوْنَ ﴿105﴾	اِنَّ	فِيْ هٰذَا	لَبَلٰغًا	لِّقَوْمٍ	عٰبِدِيْنَ ﴿106﴾ ؕ	وَمَآ
जो नेक हैं	बेशक	उसमें	अलबत्ता एक बड़ी ख़बर है	उस क़ौम के लिए	जो इबादत गुज़ार है	और नहीं

اَرْسَلْنٰكَ	اِلَّا	رَحْمَةً	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿107﴾	قُلْ	اِنَّمَا	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ
भेजा हमने आपको	मगर	रहमत बनाकर	तमाम जहान वालों के लिए	कह दीजिए	कि बेशक	वही की जाती है	मेरी तरफ़

اَنَّمَآ	اِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ۚ	فَهَلْ	اَنْتُمْ	مُّسْلِمُوْنَ ﴿108﴾	فَاِنْ
बेशक	इलाह तुम्हारा	इलाह है	एक ही	तो क्या	तुम	फ़रमाबरदार हो	फिर अगर

تَوَلَّوْا	فَقُلْ	اٰذَنْتُكُمْ	عَلٰى سَوَآءٍ ؕ	وَاِنْ	اَدْرِيْٓ	اَقَرِيْبٌ
वो मुँह मोड़ लें	तो कह दीजिए	ख़बरदार कर दिया मैंने तुम्हें	यकसाँ तौर पर	और नहीं	मैं जानता	क्या क़रीब है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْ	بَعِيْدٌ	مَّا	تُوْعَدُوْنَ (109)	اِنَّهٗ	يَعْلَمُ	الْجَهْرَ	مِنَ الْقَوْلِ
या	दूर है	जो	तुम वादा दिए जाते हो	बेशक वो	वो जानता है	ज़ाहिर को	बात में से

وَيَعْلَمُ	مَا	تَكْتُمُوْنَ (110)	وَاِنْ	اَدْرِيْ	لَعَلَّهٗ	فِتْنَةٌ	لَّكُمْ
और वो जानता है	उसको जो	तुम छुपाते हो	और नहीं	मैं जानता	शायद कि वो	फ़ितना हो	तुम्हारे लिए

وَمَتَاعٌ	اِلٰى حِيْنٍ (111)	قٰلَ	رَبِّ	احْكُمْ	بِالْحَقِّ ؕ	وَرَبُّنَا
और फ़ायदा उठाना है	एक मुद्दत तक	कहा	ऐ मेरे रब	फ़ैसला कर दे	साथ हक़ के	और रब हमारा

ع 19 7 7 النصف

الرَّحْمٰنُ	الْمُسْتَعَانُ	عَلٰى	مَا	تَصِفُوْنَ (112) ع
रहमान है	जिस से मदद तलब की जाती है	उस पर	जो	तुम बयान करते हो

اٰيَاتُهَا: 78 — 22 سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ 103 — رُكُوْعَاتُهَا: 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا	النَّاسُ	اتَّقُوْا	رَبَّكُمْ ج	اِنَّ	زَلْزَلَةَ	السَّاعَةِ	شَيْءٌ
ऐ	लोगो	डरो	अपने रब से	बेशक	ज़लज़ला	क़यामत का	चीज़ है

عَظِيْمٌ (1)	يَوْمَ	تَرَوْنَهَا	تَذْهَلُ	كُلُّ	مُرْضِعَةٍ	عَمَّاۤ
बहुत बड़ी	जिस दिन	तुम देखोगे उसे	ग़ाफ़िल हो जाएगी	हर	दूध पिलाने वाली	उससे जिसे

اَرْضَعَتْ	وَتَضَعُ	كُلُّ	ذَاتِ حَمْلٍ	حَمْلَهَا	وَتَرَى	النَّاسَ
उसने दूध पिलाया था	और गिरा देगी	हर	हमल वाली	हमल अपना	और आप देखेंगे	लोगों को

سُكٰرٰى	وَمَا	هُمْ	بِسُكٰرٰى	وَلٰكِنَّ	عَذَابَ	اللّٰهِ	شَدِيْدٌ (2)
नशे में	हालाँकि नहीं (होंगे)	वो	नशे में	और लेकिन	अज़ाब	अल्लाह का	बहुत सख़्त है

وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ	يُّجَادِلُ	فِى اللّٰهِ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ	وَّيَتَّبِعُ
और लोगों में से कोई है	जो	झगड़ता है	अल्लाह (के बारे) में	बग़ैर	इल्म के	और वो पैरवी करता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كُلَّ	شَيْطٰنٍ	مَّرِيْدٍ ۙ﴿3﴾	كُتِبَ	عَلَيْهِ	اَنَّهٗ	مَنْ	تَوَلَّاهُ
हर	शैतान	सरकश की	लिख दिया गया	उस पर	कि बेशक वो	जो कोई	दोस्त बनाएगा उसे

فَاَنَّهٗ	يُضِلُّهٗ	وَيَهْدِيْهِ	اِلٰى عَذَابِ	السَّعِيْرِ ﴿4﴾	يٰۤاَيُّهَا
तो बेशक वो	वो भटका देगा उसे	वो रहनुमाई करेगा उसकी	तरफ़ अज़ाबे	दोज़ख़ के	ऐ

النَّاسُ	اِنْ	كُنْتُمْ	فِيْ رَيْبٍ	مِّنَ الْبَعْثِ	فَاِنَّا	خَلَقْنٰكُمْ
लोगो	अगर	हो तुम	किसी शक में	दोबारा जी उठने से	तो बेशक हम	पैदा किया हमने तुम्हें

مِّنْ تُرَابٍ	ثُمَّ	مِنْ نُّطْفَةٍ	ثُمَّ	مِنْ عَلَقَةٍ	ثُمَّ	مِنْ مُّضْغَةٍ
मिट्टी से	फिर	नुत्फ़ा से	फिर	जमे हुए ख़ून से	फिर	गोश्त की बोटी से

مُّخَلَّقَةٍ	وَّغَيْرِ	مُخَلَّقَةٍ	لِّنُبَيِّنَ	لَكُمْ ؕ	وَنُقِرُّ
शक्ल वाली	और बग़ैर	शक्ल वाली	ताकि हम वाज़ेह करें	तुम्हारे लिए	और हम ठहराते हैं

فِي الْاَرْحَامِ	مَا	نَشَآءُ	اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى	ثُمَّ	نُخْرِجُكُمْ
रहमों में	जिसको	हम चाहते हैं	मुक़र्ररह मुद्दत तक	फिर	हम निकालते हैं तुम्हें

طِفْلًا	ثُمَّ	لِتَبْلُغُوْۤا	اَشُدَّكُمْ ۚ	وَمِنْكُمْ	مَّنْ	يُّتَوَفّٰى
बच्चा बना कर	फिर	ताकि तुम पहुँचो	अपनी जवानी को	और तुम में से कोई है	जो	फ़ौत किया जाता है

وَمِنْكُمْ	مَّنْ	يُّرَدُّ	اِلٰۤى	اَرْذَلِ	الْعُمُرِ	لِكَيْلَا	يَعْلَمَ
और तुम में से कोई है	जो	लौटाया जाता है	तरफ़	नाकारा	उम्र के	ताकि ना	वो जाने

مِنْۢ بَعْدِ	عِلْمٍ	شَيْـًٔا ؕ	وَتَرَى	الْاَرْضَ	هَامِدَةً	فَاِذَاۤ	اَنْزَلْنَا
बाद	जानने के	कुछ भी	और आप देखते हैं	ज़मीन को	ख़ुश्क	तो जब	उतारते हैं हम

عَلَيْهَا	الْمَآءَ	اهْتَزَّتْ	وَرَبَتْ	وَاَنْۢبَتَتْ	مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ
उस पर	पानी	वो तरो ताज़ा हो जाती है	और वो उभर आती है	और वो उगाती है	हर क़िस्म के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُحْيِ	وَاَنَّهٗ	الْحَقُّ	هُوَ	اللّٰهَ	بِاَنَّ	ذٰلِكَ	بَهِيْجٍ (5)
वो ज़िन्दा करता है	और बेशक वो	हक़ है	वो ही	अल्लाह	बवजह इसके कि	ये	रौनक़ वाले (पोदे)

السَّاعَةَ	وَّاَنَّ	قَدِيْرٌ (6) لا	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	وَاَنَّهٗ	الْمَوْتٰى
क़यामत	और बेशक	ख़ूब क़ुदरत वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	और बेशक वो	मुर्दों को

فِي الْقُبُوْرِ (7)	مَنْ	يَبْعَثُ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	فِيْهَا لا	لَّا رَيْبَ	اٰتِيَةٌ
क़ब्रों में हैं	उन्हें जो	दोबारा उठाएगा	अल्लाह	और बेशक	इसमें	नहीं कोई शक	आने वाली है

وَّلَا	عِلْمٍ	بِغَيْرِ	فِي اللّٰهِ	يُّجَادِلُ	مَنْ	وَمِنَ النَّاسِ
और बग़ैर	इल्म के	बग़ैर	अल्लाह के बारे में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से कोई है

لِيُضِلَّ	عِطْفِهٖ	ثَانِيَ	مُّنِيْرٍ (8) لا	كِتٰبٍ	وَّلَا	هُدًى
ताकि वो भटका दे	शाना अपना	मोड़ने वाला है	रोशन के	किताब	और बग़ैर	हिदायत के

يَوْمَ	وَّنُذِيْقُهٗ	خِزْيٌ	فِي الدُّنْيَا	لَهٗ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط
दिन	और हम चखाऐंगे उसे	रुस्वाई	दुनिया में	उसके लिए है	अल्लाह के रास्ते से

يَدٰكَ	قَدَّمَتْ	بِمَا	ذٰلِكَ	الْحَرِيْقِ (9)	عَذَابَ	الْقِيٰمَةِ
तेरे दोनों हाथों ने	आगे भेजा	बवजह इसके जो	ये	आग का	अज़ाब	क़यामत के

ع 1 10 8

مَنْ	وَمِنَ النَّاسِ	لِّلْعَبِيْدِ (10) ع	بِظَلَّامٍ	لَيْسَ	اللّٰهَ	وَاَنَّ
जो	और लोगों में से कोई है	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं है	अल्लाह	और बेशक

بِهٖ ج	اطْمَاَنَّ	خَيْرُ	اَصَابَهٗ	فَاِنْ	عَلٰى حَرْفٍ ج	اللّٰهَ	يَّعْبُدُ
उस पर	वो मुत्मईन हो जाता है	भलाई	पहुँचे उसे	फिर अगर	किनारे पर	अल्लाह की	इबादत करता है

الدُّنْيَا	خَسِرَ	عَلٰى وَجْهِهٖ قف ج	انْقَلَبَ	فِتْنَةُ	اَصَابَتْهُ	وَاِنْ
दुनिया	उसने नुक़सान उठाया	अपने चेहरे पर	वो पलट जाता है	आज़माइश	पहुँचे उसे	और अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِ	يَدْعُوْا	الْمُبِيْنُ (11)	الْخُسْرَانُ	هُوَ	ذٰلِكَ	وَالْاٰخِرَةَ ط
सिवाय	वो पुकारता है	खुला	ख़सारा/नुक़सान	वो	ये है	और आख़िरत का

الضَّلٰلُ	هُوَ	ذٰلِكَ	لَا يَنْفَعُهٗ ط	وَمَا	لَا يَضُرُّهٗ	مَا	اللّٰهِ
गुमराही	वो	यही है	नहीं फ़ायदा देता उसे	और जो	नहीं नुक़सान देता उसे	उसे जो	अल्लाह के

لَبِئْسَ	مِنْ نَّفْعِهٖ ط	اَقْرَبُ	ضَرُّهٗٓ	لَمَنْ	يَدْعُوْا	الْبَعِيْدُ (12) ج
अलबत्ता कितना बुरा है	उसके नफ़ा से	क़रीबतर है	नुक़सान जिसका	यक़ीनन उसे	वो पुकारता है	दूर की

اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	يُدْخِلُ	اللّٰهَ	اِنَّ	الْعَشِيْرُ (13)	وَلَبِئْسَ	الْمَوْلٰى
ईमान लाए	उन्हें जो	वो दाख़िल करेगा	अल्लाह	बेशक	साथी	और अलबत्ता कितना बुरा है	दोस्त

اِنَّ	الْاَنْهٰرُ ط	مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ	جَنّٰتٍ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
बेशक	नहरें	उनके नीचे से	बहती हैं	बाग़ात में	नेक	और उन्होंने अमल किए

لَّنْ	اَنْ	يَظُنُّ	كَانَ	مَنْ	يُرِيْدُ (14)	مَا	يَفْعَلُ	اللّٰهَ
हरगिज़ नहीं	ये कि	समझता	है	जो कोई	वो चाहता है	जो	करता है	अल्लाह

بِسَبَبٍ	فَلْيَمْدُدْ	وَالْاٰخِرَةِ	فِي الدُّنْيَا	اللّٰهُ	يَّنْصُرَهُ
एक रस्सी	पस चाहिए कि वो दराज़ कर ले	और आख़िरत में	दुनिया में	अल्लाह	मदद करेगा उसकी

مَا	كَيْدُهٗ	يُذْهِبَنَّ	هَلْ	فَلْيَنْظُرْ	ثُمَّ لْيَقْطَعْ	اِلَى السَّمَآءِ
उस (चीज़) को	तदबीर उसकी	वाक़ई लेजा ती है	क्या	फिर चाहिए कि वो देखे	फिर चाहिए कि वो काट डाले	तरफ़ आसमान के

اللّٰهَ	وَّاَنَّ	بَيِّنٰتٍ لا	اٰيٰتٍۢ	اَنْزَلْنٰهُ	وَكَذٰلِكَ	يَغِيْظُ (15)
अल्लाह	और बेशक	वाज़ेह (की शक्ल में)	आयात	नाज़िल किया हमने उसे	और इसी तरह	जो ग़ुस्सा दिलाती है

هَادُوْا	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	يُّرِيْدُ (16)	مَنْ	يَهْدِيْ
यहूदी बन गए	और वो जो	ईमान लाए	वो जो	बेशक	वो चाहता है	जिसे	वो हिदायत देता है

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهَ	اِنَّ	اَشْرَكُوْٓا ۖ	وَالَّذِيْنَ	وَالْمَجُوْسَ	وَالنَّصٰرٰى	وَالصّٰبِـِٕيْنَ
अल्लाह	बेशक	शिर्क किया	और वो जिन्होंने	और मजूसी	और नसारा	और साबी

كُلِّ	عَلٰى	اللّٰهَ	اِنَّ	الْقِيٰمَةِ ؕ	يَوْمَ	بَيْنَهُمْ	يَفْصِلُ
हर	ऊपर	अल्लाह	बेशक	क़यामत के	दिन	दर्मियान उनके	फ़ैसला करेगा

مَنْ	لَهٗ	يَسْجُدُ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَرَ	اَلَمْ	شَهِيْدٌ (17)	شَيْءٍ
जो	उसी को	सजदा करता है	अल्लाह	कि बेशक	आपने देखा	क्या नहीं	ख़ूब गवाह है	चीज़ के

وَالنُّجُوْمُ	وَالْقَمَرُ	وَالشَّمْسُ	فِي الْاَرْضِ	وَمَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ
और सितारे	और चाँद	और सूरज	ज़मीन में है	और जो	आसमानों में है

وَكَثِيْرٌ	مِّنَ النَّاسِ ؕ	وَكَثِيْرٌ	وَالدَّوَآبُّ	وَالشَّجَرُ	وَالْجِبَالُ
और बहुत से	लोगों में से	और बहुत से	और चौपाए	और दरख़्त	और पहाड़

لَهٗ	فَمَا	اللّٰهُ	يُّهِنِ	وَمَنْ	الْعَذَابُ ؕ	عَلَيْهِ	حَقَّ
उसके लिए	तो नहीं	अल्लाह	रुस्वा कर दे	और जिसे	अज़ाब	उन पर	साबित हो चुका

خَصْمٰنِ	هٰذٰنِ	يَشَآءُ ؕ (18) السجدة	مَا	يَفْعَلُ	اللّٰهَ	اِنَّ	مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ
झगड़ने वाले हैं	ये दो	वो चाहता है	जो	वो करता है	अल्लाह	बेशक	कोई इज़्ज़त देने वाला

ثِيَابٌ	لَهُمْ	قُطِّعَتْ	كَفَرُوْا	فَالَّذِيْنَ	فِيْ رَبِّهِمْ ؗ	اخْتَصَمُوْا
कपड़े	उनके लिए	काटे जा चुके हैं	कुफ़्र किया	तो वो जिन्होंने	अपने रब के बारे में	जिन्होंने झगड़ा किया

يُصْهَرُ	الْحَمِيْمُ (19) ج	رُءُوْسِهِمُ	مِنْ فَوْقِ	يُصَبُّ	مِّنْ نَّارٍ ؕ
पिघला दिया जाएगा	खौलता पानी	उनके सरों के	ऊपर से	डाला जाएगा	आग से

مَّقَامِعُ	وَلَهُمْ	وَالْجُلُوْدُ ؕ (20)	فِيْ بُطُوْنِهِمْ	مَا	بِهٖ
गुर्ज़/हथोड़े होंगे	और उनके लिए	और खालें भी	उनके पेटों में है	जो कुछ	साथ उसके

السجدة 6

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ حَدِيْدٍ ﴿21﴾	كُلَّمَآ	اَرَادُوْٓا	اَنْ	يَّخْرُجُوْا	مِنْهَا	مِنْ غَمٍّ
लोहे के	जब भी	वो चाहेंगे	कि	वो निकल जाऐं	उससे	ग़म से

ع 2 12 9

اُعِيْدُوْا	فِيْهَا ۚ	وَذُوْقُوْا	عَذَابَ	الْحَرِيْقِ ﴿22﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ
वो लौटा दिए जाऐंगे	उसी में	और चखो	अज़ाब	आग का	बेशक	अल्लाह

يُدْخِلُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ
दाख़िल करेगा	उन्हें जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	बाग़ात में	बहती हैं

مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	يُحَلَّوْنَ	فِيْهَا	مِنْ اَسَاوِرَ	مِنْ ذَهَبٍ
उनके नीचे से	नहरें	वो आरास्ता किए जाऐंगे	उनमें	कँगनों से	सोने के

وَّلُؤْلُؤًا ۭ	وَلِبَاسُهُمْ	فِيْهَا	حَرِيْرٌ ﴿23﴾	وَهُدُوْٓا	اِلَى الطَّيِّبِ
और मोती के	और लिबास होगा उनका	उसमें	रेशम	और वो राह दिखाए गए	तरफ़ पाकीज़ा

مِنَ الْقَوْلِ ۚ	وَهُدُوْٓا	اِلٰى صِرَاطِ	الْحَمِيْدِ ﴿24﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
बात के	और वो राह दिखाए गए	तरफ़ रास्ते	ख़ूब तारीफ़ वाले (रब) के	बेशक	वो जिन्होंने

كَفَرُوْا	وَيَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَالْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ	الَّذِيْ
कुफ़्र किया	और वो रोकते हैं	अल्लाह के रास्ते से	और मस्जिदे	हराम से	वो जो

جَعَلْنٰهُ	لِلنَّاسِ	سَوَآءَ ۨ	الْعَاكِفُ	فِيْهِ	وَالْبَادِ ۭ	وَمَنْ
बनाया हमने उसे	लोगों के लिए	यकसाँ/बराबर है	रहने वाला	उसमें	और बाहर से आने वाला	और जो कोई

ع 3 3 10

يُّرِدْ	فِيْهِ	بِاِلْحَادٍ	بِظُلْمٍ	نُّذِقْهُ	مِنْ عَذَابٍ	اَلِيْمٍ ﴿25﴾ ع
इरादा करेगा	उसमें	इलहाद/कज रवी का	साथ ज़ुल्म के	हम चखाऐंगे उसे	अज़ाब में से	दर्दनाक

وَاِذْ	بَوَّاْنَا	لِاِبْرٰهِيْمَ	مَكَانَ	الْبَيْتِ	اَنْ	لَّا تُشْرِكْ
और जब	मुक़र्रर कर दी हमने	इब्राहीम के लिए	जगह	बैतुल्लाह की	कि	ना तुम शरीक करो

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْقَآئِمِيْنَ	لِلطَّآئِفِيْنَ	بَيْتِيَ	وَّطَهِّرْ	شَيْئًا	بِيْ
और क़याम करने वालों	वास्ते तवाफ़ करने वालों के	मेरे घर को	और पाक रखो	किसी चीज़ को	मेरे साथ

يَاْتُوْكَ	بِالْحَجِّ	فِي النَّاسِ	وَاَذِّنْ	السُّجُوْدِ (26)	وَالرُّكَّعِ
वो आऐंगे तेरे पास	हज का	लोगों में	और ऐलान करदो	और सजदा करने वालों के	और रुकूअ करने वालों

عَمِيْقٍ (27) لا	مِنْ كُلِّ فَجٍّ	يَّاْتِيْنَ	ضَامِرٍ	كُلِّ	وَّعَلٰى	رِجَالًا
दूर दराज़ के	हर कुशादा रास्ते से	वो आऐंगे	लाग़र ऊँट के	हर	और ऊपर	पैदल

اللّٰهِ	اسْمَ	وَيَذْكُرُوا	لَهُمْ	مَنَافِعَ	لِّيَشْهَدُوْا
अल्लाह का	नाम	और ज़िक्र करें	अपने लिए	फ़ायदों को	ताकि वो देखें

الْاَنْعَامِ ج	مِّنْۢ بَهِيْمَةِ	رَزَقَهُمْ	مَا	عَلٰى	فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ
मवेशियों के	चौपायों में से	उसने रिज़्क़ दिया उन्हें	जो	उस पर	मालूम दिनों में

ثُمَّ لْيَقْضُوْا	الْفَقِيْرَ (28) ز	الْبَآئِسَ	وَاَطْعِمُوا	مِنْهَا	فَكُلُوْا
फिर चाहिए कि वो दूर करें	मोहताज को	भूखे	और खिलाओ	उसमें से	पस खाओ

الْعَتِيْقِ (29)	بِالْبَيْتِ	وَلْيَطَّوَّفُوْا	نُذُوْرَهُمْ	وَلْيُوْفُوْا	تَفَثَهُمْ
जो क़दीम है	उस घर का	और चाहिए कि वो तवाफ़ करें	नज़रें अपनी	और चाहिए कि वो पूरी करें	मैल अपना

لَّهٗ	خَيْرٌ	فَهُوَ	حُرُمٰتِ اللّٰهِ	يُّعَظِّمْ	وَمَنْ	ذٰلِكَ ق
उसके लिए	बेहतर है	तो वो	अल्लाह की हुरमतों की	ताज़ीम करेगा	और जो कोई	ये है (हुक्म)

يُتْلٰى	مَا	اِلَّا	الْاَنْعَامُ	لَكُمُ	وَاُحِلَّتْ	رَبِّهٖ ط	عِنْدَ
पढ़े जाते हैं	उनके जो	सिवाय	चौपाए	तुम्हारे लिए	और हलाल किए गए	उसके रब के	नज़दीक

الزُّوْرِ (30) لا	قَوْلَ	وَاجْتَنِبُوْا	مِنَ الْاَوْثَانِ	الرِّجْسَ	فَاجْتَنِبُوا	عَلَيْكُمْ
झूठी से	बात	और बचो	बुतों की	गन्दगी से	पस बचो	तुम पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاللّٰهِ	يُّشْرِكْ	وَمَنْ	بِهٖ ؕ	مُشْرِكِيْنَ	غَيْرَ	لِلّٰهِ	حُنَفَآءَ
साथ अल्लाह के	शिर्क करेगा	और जो	साथ उसके	शरीक करने वाले	ना	अल्लाह के लिए	यकसू होकर

بِهِ	تَهْوِيْ	اَوْ	الطَّيْرُ	فَتَخْطَفُهُ	مِنَ السَّمَآءِ	خَرَّ	فَكَاَنَّمَا
उसे	गिरा देती है	या	परिन्दे	फिर उचक लेते हैं उसे	आसमान से	वो गिर पड़ा	तो गोया कि

شَعَآئِرَ اللّٰهِ	يُّعَظِّمْ	وَمَنْ	ذٰلِكَ ق	سَحِيْقٍ (31)	فِيْ مَكَانٍ	الرِّيْحُ
अल्लाह की निशानियों की	ताज़ीम करेगा	और जो	ये है (हुक्म)	दूर दराज़	किसी जगह में	हवा

اِلٰٓى اَجَلٍ	مَنَافِعُ	فِيْهَا	لَكُمْ	الْقُلُوْبِ (32)	مِنْ تَقْوَى	فَاِنَّهَا
एक वक़्त तक	कुछ फ़ायदे हैं	इसमें	तुम्हारे लिए	दिलों के	तक़वा में से है	तो बेशक वो

اُمَّةٍ	وَلِكُلِّ	الْعَتِيْقِ (33) ع	اِلَى الْبَيْتِ	مَحِلُّهَآ	ثُمَّ	مُّسَمًّى
उम्मत के	और वास्ते हर	जो क़दीम है	तरफ़ उस घर के है	हलाल होने की जगह उनकी	फिर	जो मुक़र्रर है

ع 4 8 11

رَزَقَهُمْ	مَا	عَلٰى	اللّٰهِ	اسْمَ	لِّيَذْكُرُوا	مَنْسَكًا	جَعَلْنَا
उसने रिज़्क़ दिया उन्हें	जो	उस पर	अल्लाह का	नाम	ताकि वो ज़िक्र करें	क़ुर्बानी करना	मुक़र्रर किया हमने

فَلَهٗٓ	وَّاحِدٌ	اِلٰهٌ	فَاِلٰهُكُمْ	الْاَنْعَامِ ؕ	مِّنْۢ بَهِيْمَةِ
तो उसी के लिए	एक ही	इलाह है	तो इलाह तुम्हारा	मवेशियों के	चौपायों में से

اللّٰهُ	ذُكِرَ	اِذَا	الَّذِيْنَ	الْمُخْبِتِيْنَ (34) لا	وَبَشِّرِ	اَسْلِمُوْا ؕ
अल्लाह का	ज़िक्र किया जाता है	जब	वो लोग	आजिज़ी करने वालों को	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए	फ़रमाबरदार हो जाओ

وَالْمُقِيْمِي	اَصَابَهُمْ	مَآ	عَلٰى	وَالصّٰبِرِيْنَ	قُلُوْبُهُمْ	وَجِلَتْ
और क़ायम करने वाले हैं	मुसीबत पहुँचे उन्हें	जो	उस पर	और जो सब्र करने वाले हैं	दिल उनके	डर जाते हैं

جَعَلْنٰهَا	وَالْبُدْنَ	يُنْفِقُوْنَ (35)	رَزَقْنٰهُمْ	وَمِمَّا	الصَّلٰوةِ لا
बनाया हमने उन्हें	और क़ुर्बानी के ऊँट	वो ख़र्च करते हैं	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	और उसमें से जो	नमाज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اسْمَ	فَاذْكُرُوا	خَيْرٌ ۖ	فِيْهَا	لَكُمْ	اللّٰهِ	مِّنْ شَعَآئِرِ	لَكُمْ
नाम	पस ज़िक्र करो	भलाई है	उनमें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	निशानियों में से	तुम्हारे लिए

مِنْهَا	فَكُلُوْا	جُنُوْبُهَا	وَجَبَتْ	فَاِذَا	صَوَآفَّ ۚ	عَلَيْهَا	اللّٰهِ
उनमें से	पस खाओ	पहलू उनके	गिर पड़ें	फिर जब	सफ़ बस्ता खड़ा करके	उन पर	अल्लाह का

لَكُمْ	سَخَّرْنٰهَا	كَذٰلِكَ	وَالْمُعْتَرَّ ؕ	الْقَانِعَ	وَاَطْعِمُوا
तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया हमने उन्हें	इसी तरह	और सवाल करने वाले को	क़नाअत करने वाले	और खिलाओ

دِمَآؤُهَا	وَلَا	لُحُوْمُهَا	اللّٰهَ	يَّنَالَ	لَنْ	تَشْكُرُوْنَ (36)	لَعَلَّكُمْ
ख़ून उनके	और ना	गोश्त उनके	अल्लाह को	पहुँचते	हरगिज़ नहीं	तुम शुक्र करो	ताकि तुम

لَكُمْ	سَخَّرَهَا	كَذٰلِكَ	مِنْكُمْ ؕ	التَّقْوٰى	يَّنَالُهُ	وَلٰكِنْ
तुम्हारे लिए	उसने मुसख़्ख़र किया उन्हें	इसी तरह	तुम्हारा	तक़वा	पहुँचता है उसे	और लेकिन

الْمُحْسِنِيْنَ (37)	وَبَشِّرِ	هَدٰىكُمْ ؕ	مَا	عَلٰى	اللّٰهَ	لِتُكَبِّرُوا
नेकी करने वालों को	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए	उसने हिदायत दी तुम्हें	जो	उस पर	अल्लाह की	ताकि तुम बड़ाई बयान करो

لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ	اٰمَنُوْا ؕ	عَنِ الَّذِيْنَ	يُدٰفِعُ	اللّٰهَ	اِنَّ
नहीं वो पसंद करता	अल्लाह	बेशक	ईमान लाए	उन लोगों की तरफ़ से जो	दफ़ा करता है	अल्लाह	बेशक

ع 5 الثلثة 12

يُقٰتَلُوْنَ	لِلَّذِيْنَ	اُذِنَ	كَفُوْرٍ (38) ع	خَوَّانٍ	كُلَّ
जंग किए जाते हैं	उनको जो	इजाज़त दे दी गई (जंग की)	बहुत नाशुक्रे को	बहुत ख़यानत करने वाले	हर

الَّذِيْنَ	لَقَدِيْرُ (39) ۙ	عَلٰى نَصْرِهِمْ	اللّٰهَ	وَاِنَّ	ظُلِمُوْا ؕ	بِاَنَّهُمْ
वो जो	अलबत्ता ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	उनकी मदद पर	अल्लाह	और बेशक	ज़ुल्म किए गए हैं	क्योंकि वो

اللّٰهُ ؕ	رَبُّنَا	يَّقُوْلُوْا	اَنْ	اِلَّآ	حَقٍّ	بِغَيْرِ	مِنْ دِيَارِهِمْ	اُخْرِجُوْا
अल्लाह है	रब हमारा	वो कहते हैं	ये कि	मगर	हक़ के	बग़ैर	अपने घरों से	निकाले गए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَوْلَا	دَفْعُ	اللّٰهِ	النَّاسَ	بَعْضَهُمْ	بِبَعْضٍ	لَّهُدِّمَتْ
और अगर ना होता	दूर करना	अल्लाह का	लोगों को	उनके बाज़ को	साथ बाज़ के	अलबत्ता मुनहदिम कर दी जातीं

صَوَامِعُ	وَبِيَعٌ	وَّصَلَوٰتٌ	وَّمَسٰجِدُ	يُذْكَرُ	فِيْهَا	اسْمُ
ख़ानक़ाहें	और गिरजे	और इबादत ख़ाने	और मस्जिदें	ज़िक्र किया जाता है	जिनमें	नाम

اللّٰهِ	كَثِيْرًا ؕ	وَلَيَنْصُرَنَّ	اللّٰهُ	مَنْ	يَّنْصُرُهٗ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
अल्लाह का	बकसरत/बहुत	और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा	अल्लाह	उसकी जो	मदद करता है उसकी	बेशक	अल्लाह

لَقَوِيٌّ	عَزِيْزٌ (40)	اَلَّذِيْنَ	اِنْ	مَّكَّنّٰهُمْ	فِي الْاَرْضِ	اَقَامُوا
अलबत्ता बहुत क़ुव्वत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	वो लोग जो	अगर	इक़्तिदार दें हम उन्हें	ज़मीन में	वो क़ायम करें

الصَّلٰوةَ	وَاٰتَوُا	الزَّكٰوةَ	وَاَمَرُوْا	بِالْمَعْرُوْفِ	وَنَهَوْا	عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ
नमाज़	और अदा करें	ज़कात	और वो हुक्म दें	नेकी का	और वो रोकें	बुराई से

وَلِلّٰهِ	عَاقِبَةُ	الْاُمُوْرِ (41)	وَاِنْ	يُّكَذِّبُوْكَ	فَقَدْ	كَذَّبَتْ
और अल्लाह ही के लिए है	अंजाम	सब कामों का	और अगर	वो झुठलाएं आपको	तो तहक़ीक़	झुठलाया

قَبْلَهُمْ	قَوْمُ	نُوْحٍ	وَّعَادٌ	وَّثَمُوْدُ (42) لا	وَقَوْمُ	اِبْرٰهِيْمَ	وَقَوْمُ
उनसे पहले	क़ौमे	नूह ने	और आद	और समूद ने	और क़ौमे	इब्राहीम	और क़ौमे

لُوْطٍ (43) لا	وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ج	وَكُذِّبَ	مُوْسٰى	فَاَمْلَيْتُ	لِلْكٰفِرِيْنَ
लूत	और मदयन के रहने वालों ने	और झुठलाए गए	मूसा	तो ढील दी मैंने	काफ़िरों को

ثُمَّ	اَخَذْتُهُمْ ج	فَكَيْفَ	كَانَ	نَكِيْرِ (44)	فَكَاَيِّنْ	مِّنْ قَرْيَةٍ
फिर	पकड़ लिया मैंने उन्हें	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	तो कितनी ही	बस्तियाँ

اَهْلَكْنٰهَا	وَهِيَ	ظَالِمَةٌ	فَهِيَ	خَاوِيَةٌ	عَلٰى	عُرُوْشِهَا	وَبِئْرٍ
हलाक किया हमने उन्हें	जब कि वो	ज़ालिम थीं	तो वो	गिरी पड़ी हैं	ऊपर	अपनी छतों के	और कुएँ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّعَطَّلَةٍ	وَّقَصْرٍ	مَّشِيْدٍ ﴿45﴾	اَفَلَمْ	يَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ	فَتَكُوْنَ
बेकार	और महल	पुख़्ता	क्या भला नहीं	वो चले फिरे	ज़मीन में	तो होते

لَهُمْ	قُلُوْبٌ	يَّعْقِلُوْنَ	بِهَآ	اَوْ	اٰذَانٌ	يَّسْمَعُوْنَ	بِهَا ۚ
उनके लिए	दिल	वो अक़्ल से काम लेते	साथ उनके	या	कान	वो सुनते	साथ उनके

فَاِنَّهَا	لَا تَعْمَى	الْاَبْصَارُ	وَلٰكِنْ	تَعْمَى	الْقُلُوْبُ
तो बेशक बात ये है कि	नहीं अँधी होतीं	आँखें	और लेकिन	अँधे हो जाते हैं	दिल

الَّتِيْ	فِي الصُّدُوْرِ ﴿46﴾	وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ	بِالْعَذَابِ	وَلَنْ	يُّخْلِفَ
वो जो	सीनों में हैं	और वो जल्दी माँगते हैं आपसे	अज़ाब को	और हरगिज़ ना	ख़िलाफ़ करेगा

اللّٰهُ	وَعْدَهٗ ؕ	وَاِنَّ	يَوْمًا	عِنْدَ	رَبِّكَ	كَاَلْفِ	سَنَةٍ
अल्लाह	अपने वादे के	और बेशक	एक दिन	नज़दीक	आपके रब के	मानिन्द एक हज़ार	साल के है

مِّمَّا	تَعُدُّوْنَ ﴿47﴾	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ قَرْيَةٍ	اَمْلَيْتُ	لَهَا	وَهِيَ
उससे जो	तुम गिनते हो	और कितनी ही	बस्तियाँ	ढील दी मैंने	उन्हें	जब कि वो

6 ع 10 13

ظَالِمَةٌ	ثُمَّ	اَخَذْتُهَا ۚ	وَاِلَيَّ	الْمَصِيْرُ ﴿48﴾ ع	قُلْ	يٰٓاَيُّهَا
ज़ालिम थीं	फिर	पकड़ लिया मैंने उन्हें	और मेरी ही तरफ़	लौटना है	कह दीजिए	ऐ

النَّاسُ	اِنَّمَآ	اَنَا	لَكُمْ	نَذِيْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿49﴾ ۚ	فَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
लोगो	बेशक	मैं	तुम्हारे लिए	डराने वाला हूँ	खुल्लम-खुल्ला	तो वो जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ	وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ ﴿50﴾	وَالَّذِيْنَ
और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए	बख़्शिश	और रिज़्क़ है	इज़्ज़त वाला	और वो जिन्होंने

سَعَوْا	فِيْٓ اٰيٰتِنَا	مُعٰجِزِيْنَ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	الْجَحِيْمِ ﴿51﴾	وَمَا
कोशिश की	हमारी आयात में	आजिज़ करने वाले बन कर	यही लोग हैं	साथी	जहन्नम के	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَرۡسَلۡنَا	مِنۡ قَبۡلِكَ	مِنۡ رَّسُوۡلٍ	وَّلَا	نَبِىٍّ	اِلَّاۤ	اِذَا	تَمَنّٰٓى
भेजा हमने	आपसे पहले	कोई रसूल	और ना	कोई नबी	मगर	जब	उसने पढ़ा

اَلۡقَى	الشَّيۡطٰنُ	فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖۚ	فَيَنۡسَخُ	اللّٰهُ	مَا	يُلۡقِى
डाल दिया	शैतान ने	उसके पढ़ने में	पस मिटा देता है	अल्लाह	उसे जो	डालता है

الشَّيۡطٰنُ	ثُمَّ	يُحۡكِمُ	اللّٰهُ	اٰيٰتِهٖؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيۡمٌ	حَكِيۡمٌ ۙ (52)
शैतान	फिर	मज़बूत करता है	अल्लाह	आयात अपनी	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब हिकमत वाला है

لِّيَجۡعَلَ	مَا	يُلۡقِى	الشَّيۡطٰنُ	فِتۡنَةً	لِّلَّذِيۡنَ	فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ
ताकि वो बना दे	उसे जो	डालता है	शैतान	एक आज़माइश	उन लोगों के लिए	जिनके दिलों में

مَّرَضٌ	وَّالۡقَاسِيَةِ	قُلُوۡبُهُمۡؕ	وَاِنَّ	الظّٰلِمِيۡنَ	لَفِىۡ شِقَاقٍۢ
बीमारी है	और सख़्त हैं	दिल उनके	और यक़ीनन	ज़ालिम लोग	अलबत्ता मुख़ालिफ़त में हैं

بَعِيۡدٍ ۙ (53)	وَّلِيَـعۡلَمَ	الَّذِيۡنَ	اُوۡتُوا	الۡعِلۡمَ	اَنَّهُ	الۡحَـقُّ
दूर की	और ताकि जान लें	वो लोग जो	दिए गए	इल्म	कि बेशक वो	हक़ है

مِنۡ رَّبِّكَ	فَيُؤۡمِنُوۡا	بِهٖ	فَتُخۡبِتَ	لَهٗ	قُلُوۡبُهُمۡؕ	وَاِنَّ
आपके रब की तरफ़ से	फिर वो ईमान ले आऐं	उस पर	फिर आजिज़ी करें	उसके लिए	दिल उनके	और बेशक

اللّٰهَ	لَهَادِ	الَّذِيۡنَ	اٰمَنُوۡۤا	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسۡتَقِيۡمٍ (54)	وَلَا يَزَالُ
अल्लाह	अलबत्ता राह दिखाने वाला है	उनको जो	ईमान लाए	तरफ़ रास्ते	सीधे के	और हमेशा रहेंगे

الَّذِيۡنَ	كَفَرُوۡا	فِىۡ مِرۡيَةٍ	مِّنۡهُ	حَتّٰى	تَاۡتِيَهُمُ	السَّاعَةُ
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	शक में	उसकी तरफ़ से	यहाँ तक कि	आ जाएगी उनके पास	घड़ी

بَغۡتَةً	اَوۡ	يَاۡتِيَهُمۡ	عَذَابُ	يَوۡمٍ	عَقِيۡمٍ (55)	اَلۡمُلۡكُ	يَوۡمَـئِذٍ
अचानक	या	आ जाएगा उनके पास	अज़ाब	दिन	बाँझ का	बादशाहत	उस दिन (होगी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	فَالَّذِيْنَ	بَيْنَهُمْ ؕ	يَحْكُمُ	لِلّٰهِ ؕ
नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	पस वो लोग जो	दर्मियान उनके	वो फ़ैसला करेगा	अल्लाह के लिए

فَاُولٰٓئِكَ	بِاٰيٰتِنَا	وَكَذَّبُوْا	كَفَرُوْا	وَالَّذِيْنَ	النَّعِيْمِ ﴿56﴾	فِيْ جَنّٰتِ
तो यही लोग हैं	हमारी आयात को	और झुठलाया	कुफ़्र किया	और वो जिन्होंने	नेअमतों वाली	जन्नतों में (होंगे)

ع 7 9 14

ثُمَّ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	هَاجَرُوْا	وَالَّذِيْنَ	مُّهِيْنٌ ﴿57﴾ ع	عَذَابٌ	لَهُمْ
फिर	अल्लाह के रास्ते में	हिजरत की	और वो जिन्होंने	रुस्वाकुन	अज़ाब होगा	उनके लिए

وَاِنَّ	حَسَنًا ؕ	رِزْقًا	اللّٰهُ	لَيَرْزُقَنَّهُمُ	مَاتُوْا	اَوْ	قُتِلُوْٓا
और बेशक	अच्छा	रिज़्क़	अल्लाह	अलबत्ता ज़रूर रिज़्क़ देगा उन्हें	वो मर गए	या	वो क़त्ल किए गए

مُّدْخَلًا	لَيُدْخِلَنَّهُمْ	الرّٰزِقِيْنَ ﴿58﴾	خَيْرُ	لَهُوَ	اللّٰهَ
दाख़िल होने की जगह	अलबत्ता वो ज़रूर दाख़िल करेगा उन्हें	सब रिज़्क़ देने वालों से	बेहतर है	अलबत्ता वो ही	अल्लाह

عَاقَبَ	وَمَنْ	ذٰلِكَ ج	حَلِيْمٌ ﴿59﴾	لَعَلِيْمٌ	اللّٰهَ	وَاِنَّ	يَّرْضَوْنَهٗ ؕ
बदला ले	और जो कोई	ये है	ख़ूब हिल्म वाला है	अलबत्ता ख़ूब इल्म वाला है	अल्लाह	और बेशक	वो पसंद करेंगे जिसे

لَيَنْصُرَنَّهُ	عَلَيْهِ	بُغِيَ	ثُمَّ	بِهٖ	عُوْقِبَ	مَا	بِمِثْلِ
अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा उसकी	उस पर	ज़्यादती की गई	फिर	उसे	सताया गया	जो	मानिन्द उसके

اللّٰهَ	بِاَنَّ	ذٰلِكَ	غَفُوْرٌ ﴿60﴾	لَعَفُوٌّ	اللّٰهَ	اِنَّ	اللّٰهُ ؕ
अल्लाह	बवजह इसके कि	ये	बहुत बख़्शने वाला है	अलबत्ता बहुत माफ़ करने वाला है	अल्लाह	बेशक	अल्लाह

اللّٰهَ	وَاَنَّ	فِي الَّيْلِ	النَّهَارَ	وَيُوْلِجُ	فِي النَّهَارِ	الَّيْلَ	يُوْلِجُ
अल्लाह	और बेशक	रात में	दिन को	और वो दाख़िल करता है	दिन में	रात को	वो दाख़िल करता है

مَا	وَاَنَّ	الْحَقُّ	هُوَ	اللّٰهَ	بِاَنَّ	ذٰلِكَ	بَصِيْرٌ ﴿61﴾	سَمِيْعٌۢ
जिसे	और बेशक	हक़ है	वो ही	अल्लाह	बवजह इसके कि	ये	ख़ूब देखने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ	هُوَ	الْبَاطِلُ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الْعَلِيُّ
वो पुकारते हैं	उसके सिवा	वो	बातिल है	और बेशक	अल्लाह	वो ही	बहुत बुलन्द है

الْكَبِيْرُ (62)	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً ز
बहुत बड़ा है	क्या नहीं	आपने देखा	बेशक	अल्लाह ने	उतारा	आसमान से	पानी

فَتُصْبِحُ	الْاَرْضُ	مُخْضَرَّةً ط	اِنَّ	اللّٰهَ	لَطِيْفٌ	خَبِيْرٌ (63) ج
तो हो जाती है	ज़मीन	सरसब्ज़	बेशक	अल्लाह	बहुत बारीक बीन है	ख़ूब ख़बर रखने वाला है

لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ط	وَ اِنَّ	اللّٰهَ	لَهُوَ
उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और बेशक	अल्लाह	अलबत्ता वो

الْغَنِيُّ	الْحَمِيْدُ (64) ع	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	سَخَّرَ	لَكُمْ	مَّا
बहुत बेनियाज़ है	बहुत तारीफ़ वाला है	क्या नहीं	आपने देखा	बेशक	अल्लाह ने	मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	जो कुछ

ع 8 7 15

فِي الْاَرْضِ	وَالْفُلْكَ	تَجْرِيْ	فِي الْبَحْرِ	بِاَمْرِهٖ ط	وَيُمْسِكُ	السَّمَآءَ
ज़मीन में है	और कश्तियों को	जो चलती है	समुन्दर में	उसके हुक्म से	और वो थामे रखता है	आसमान को

اَنْ	تَقَعَ	عَلَى الْاَرْضِ	اِلَّا	بِاِذْنِهٖ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	بِالنَّاسِ
इससे कि	वो गिर पड़े	ज़मीन पर	मगर	उसके इज़्न से	बेशक	अल्लाह	साथ लोगों के

لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ (65)	وَهُوَ	الَّذِيْٓ	اَحْيَاكُمْ ز	ثُمَّ
अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और वही है	जिसने	ज़िन्दा किया तुम्हें	फिर

يُمِيْتُكُمْ	ثُمَّ	يُحْيِيْكُمْ ط	اِنَّ	الْاِنْسَانَ	لَكَفُوْرٌ (66)	لِكُلِّ	اُمَّةٍ
वो मौत देगा तुम्हें	फिर	वो ज़िन्दा करेगा तुम्हें	यक़ीनन	इन्सान	अलबत्ता बहुत नाशुक्रा है	वास्ते हर	उम्मत के

جَعَلْنَا	مَنْسَكًا	هُمْ	نَاسِكُوْهُ	فَلَا	يُنَازِعُنَّكَ	فِي الْاَمْرِ
मुक़र्रर किया हमने	इबादत का तरीक़ा	वो	चलने वाले हैं उस पर	तो ना	वो हरगिज़ झगड़ा करें आप से	इस मामले में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَادْعُ	اِلٰى رَبِّكَ ؕ	اِنَّكَ	لَعَلٰى	هُدًى	مُّسْتَقِيْمٍ (67)	وَاِنْ
और दावत दीजिए	तरफ़ अपने रब के	बेशक आप	अलबत्ता ऊपर	हिदायत	सीधी के हैं	और अगर

جٰدَلُوْكَ	فَقُلِ	اللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ (68)	اَللّٰهُ	يَحْكُمُ
वो झगड़ा करें आपसे	तो कह दीजिए	अल्लाह	ज़्यादा जानता है	उसे जो	तुम अमल करते हो	अल्लाह	वो फ़ैसला करेगा

بَيْنَكُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	فِيْمَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ	تَخْتَلِفُوْنَ (69)
दर्मियान तुम्हारे	दिन	क़यामत के	उस मामले में जो	थे तुम	उसमें	तुम इख़्तिलाफ़ करते

اَلَمْ	تَعْلَمْ	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا	فِى السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ ؕ	اِنَّ
क्या नहीं	आप जानते	कि बेशक	अल्लाह	जानता है	जो कुछ	आसमान में	और ज़मीन में है	बेशक

ذٰلِكَ	فِىْ كِتٰبٍ ؕ	اِنَّ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرٌ (70)	وَيَعْبُدُوْنَ
ये	एक किताब में है	बेशक	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान है	और वो इबादत करते हैं

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَمْ	يُنَزِّلْ	بِهٖ	سُلْطٰنًا	وَّمَا	لَيْسَ
सिवाय	अल्लाह के	उसकी जो	नहीं	उसने नाज़िल की	जिसकी	कोई दलील	और उसकी जो	नहीं है

لَهُمْ	بِهٖ	عِلْمٌ ؕ	وَمَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ نَّصِيْرٍ (71)	وَاِذَا	تُتْلٰى
उनके लिए	जिसका	कोई इल्म	और नहीं	ज़लिमों के लिए	कोई मददगार	और जब	पढ़ी जाती हैं

عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا	بَيِّنٰتٍ	تَعْرِفُ	فِىْ وُجُوْهِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوا
उन पर	आयात हमारी	वाज़ेह	आप पहचान सकते हैं	चेहरों में	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया

الْمُنْكَرَ ؕ	يَكَادُوْنَ	يَسْطُوْنَ	بِالَّذِيْنَ	يَتْلُوْنَ	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتِنَا ؕ
नागवारी को	क़रीब हैं	कि वो हमला कर दें	उन पर जो	पढ़ते हैं	उन पर	आयात हमारी

قُلْ	اَفَاُنَبِّئُكُمْ	بِشَرٍّ	مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ	اَلنَّارُ ؕ	وَعَدَهَا	اللّٰهُ
कह दीजिए	क्या फिर मैं बताऊँ तुम्हें	बुरी चीज़	उससे	आग	वादा किया है उसका	अल्लाह ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 9 8 16

ضُرِبَ	النَّاسُ	يٰٓاَيُّهَا	الْمَصِيْرُ (72) ع	وَبِئْسَ	كَفَرُوْاؕ	الَّذِيْنَ
बयान की गई है	लोगो	ऐ	ठिकाना	और कितना बुरा है	कुफ़्र किया	उनसे जिन्होंने

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ	تَدْعُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	لَهٗؕ	فَاسْتَمِعُوْا	مَثَلٌ
अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो	वो जिन्हें	बेशक	उसे	पस ग़ौर से सुनो	एक मिसाल

يَّسْلُبْهُمُ	وَاِنْ	لَهٗؕ	اجْتَمَعُوْا	وَّلَوِ	ذُبَابًا	يَّخْلُقُوْا	لَنْ
छीन ले उनसे	और अगर	उसके लिए	वो जमा हो जाएं	और अगरचे	एक मक्खी	वो पैदा कर सकते	हरगिज़ नहीं

الطَّالِبُ	ضَعُفَ	مِنْهُؕ	لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ	شَيْـًٔا	الذُّبَابُ
तलब करने वाला	कितना कमज़ोर है	उससे	नहीं वो छुड़ा सकते उसको	कोई चीज़	मक्खी

اللّٰهَ	اِنَّ	قَدْرِهٖؕ	حَقَّ	اللّٰهَ	قَدَرُوا	مَا	وَالْمَطْلُوْبُ (73)
अल्लाह	बेशक	उसकी क़द्र का	जैसे हक़ है	अल्लाह की	उन्होंने क़द्र की	नहीं	और वो जिससे तलब किया जाता है

رُسُلًا	مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	يَصْطَفِيْ	اَللّٰهُ	عَزِيْزٌ (74)	لَقَوِيٌّ
पैग़ाम पहुँचाने वाले	फ़रिश्तों में से	चुन लेता है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	अलबत्ता बहुत क़ुव्वत वाला है

مَا	يَعْلَمُ	بَصِيْرٌ (75) ج	سَمِيْعٌۢ	اللّٰهَ	اِنَّ	وَّمِنَ النَّاسِؕ
जो कुछ	वो जानता है	ख़ूब देखने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	अल्लाह	बेशक	और इन्सानों में से भी

الْاُمُوْرُ (76)	تُرْجَعُ	وَاِلَى اللّٰهِ	خَلْفَهُمْؕ	وَمَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
सब काम	लौटाए जाते हैं	और तरफ़ अल्लाह ही के	उनके पीछे है	और जो कुछ	उनके आगे है

وَافْعَلُوا	رَبَّكُمْ	وَاعْبُدُوْا	وَاسْجُدُوْا	ارْكَعُوْا	اٰمَنُوا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
और करो	अपने रब की	और इबादत करो	और सजदा करो	रुकूअ करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

حَقَّ	فِي اللّٰهِ	وَجَاهِدُوْا	تُفْلِحُوْنَ (77) السجدة ج	لَعَلَّكُمْ	الْخَيْرَ
(जैसा कि) हक़ है	अल्लाह (के रास्ते) में	और जिहाद करो	फ़लाह पा जाओ	ताकि तुम	भलाई

السجدة عند الشافعي

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جِهَادِهٖ ؕ	هُوَ	اجْتَبٰىكُمْ	وَمَا	جَعَلَ	عَلَيْكُمْ	فِي الدِّيْنِ
उसके जिहाद का	उसने	चुन लिया है तुम्हें	और नहीं	उसने बनाई	तुम पर	दीन के मामले में

مِنْ حَرَجٍ ؕ	مِلَّةَ	اَبِيْكُمْ	اِبْرٰهِيْمَ ؕ	هُوَ	سَمّٰىكُمُ	الْمُسْلِمِيْنَ ۙ
कोई तंगी	ये दीन है	तुम्हारे बाप	इब्राहीम का	उस (अल्लाह) ने	नाम रखा है तुम्हारा	मुसलमान

مِنْ قَبْلُ	وَفِيْ هٰذَا	لِيَكُوْنَ	الرَّسُوْلُ	شَهِيْدًا	عَلَيْكُمْ	وَتَكُوْنُوْا
इस से पहले (भी)	और इस में (भी)	ताकि हों	रसूल	गवाह	तुम पर	और तुम हो जाओ

شُهَدَآءَ	عَلَى النَّاسِ ۖ	فَاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتُوا	الزَّكٰوةَ	وَاعْتَصِمُوْا
गवाह	तमाम इन्सानों पर	पस क़ायम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात	और मज़बूत थाम लो

ع 10 6 17

بِاللّٰهِ ؕ	هُوَ	مَوْلٰىكُمْ ۚ	فَنِعْمَ	الْمَوْلٰى	وَنِعْمَ	النَّصِيْرُ ﴿78﴾ ع
अल्लाह को	वो ही	मौला है तुम्हारा	पस कितना अच्छा है	मौला/दोस्त	और कितना अच्छा है	मददगार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION